वलै । दछिनलछिनजान ॥३४॥ अथदछिनलछिनं ॥दोहा
॥हरिसदिसैंसोंसमतूलछंनकीडैमनहांतोकरदियउं
तैदोतदितदानिये ।लोकसंत्र्लोकआननीकेठकेलाग
बदैसीताङ्काइतगीतकेसैंतरआनियै । आंषनिकोदषि
यतमोईसावीकेसौरायकाननकोखुनीमाचीकबछंन
मानियै ।गोकुलकीकुलटायेयोंहीकुलटावतिदैआड
लोंतोवैसहीदैकाल्दकीनजानियै ॥३५॥ अथपकामद

सवैया॥ आवरयैंउविदारि अलीजन आवरयोंग दिये
सागदियैं। कहोमेरीमनिकहासयोताकदभूरुतकेसवद्र
रुयहीयौं। डीवलगीकिधौंडतलगैपाकिलग्यौउरधीतम
जाहइरीयौं। आननसीकरसीकदियैंधकसौवततेंअंकु
लाइनठीकैयौं॥३०॥ कन्हैयाकोस्वप्नसवैया॥ नखपदपं
दवीकुपावैपदजोपतिनएकोविसाउरवसीउरमैंनआन
वी। लोमसीवलोमजानितिलसीतिलातमानिमैंनदीसमा
नमनमैनकानमानवी। जानिएनकौनजातअबदीजगा।
यैंजातजाबजानिजंजौवदजौंदपद्दिवानवी। वातकैं
सीवानीमहानाउमेनवानीमद्दिकेसारायरतीमैंरतीकैं

अग्रसनां केरमदिसमाने दो। औरगुढ के दाकजं मूढा
दो डिजानि जाउ जे बोउसब के सोरादनी कैं करि जाने दो
। तन ज्ञान मन ज्ञान कपट निधान काबू माचीक दै मारी ज्ञा।
न का देकं मगने दो। वेता दे बिकानी दा घमेरें जं बिदा रेव
मउड नाघ दाव कौन कै बिकाने दो ॥४०॥ अथ ४६ लघ
ने ॥ दोहरा ॥ लाडन गारि जमार की। छाडि दई सब बास
। देषो दोष न मान दी ४६ सौ के सो दास ॥४१॥ ४७ ना
४६ वनीं न सवैया यथा ॥ नेह तरै लै ले लाज तनाजन कौ

कैधौं वह काम लता अवलंबै सु तो मन मूढ उपाय न पावै। की
डै कहा बुध दीहै सुधी सु जराधिका के उर मैं पद आवै। ला
गति यौं कबहूं कबहूं अब बारक ज्यौं अंगुरी मुष लावै॥
५०॥ नायक को प्रकास अभिलाष॥ हे कोइ माई हितू इन
कोइ हह नायक है कि हि दिवाय वहै है। न्यायै दीके सब गो
कुल की कुलटा कुलनारु नि नाम लहै है। देषि री देषि लगा
इ टकी इत सो नासो घालि गुडाइ रही है। को हरि को उस
डा न ननादी बकालिंदी कौ केसदेस कहै है॥ ५१॥ अथ
चिंतावलीनं॥ दोहरा॥ कैसै के मिलिवौ वनै हरि कैसैं वरि
होय। यह चिंता चित चेतिकै बरनत है सब कोइ॥ ५२॥
नायका प्रछन्न चिंता॥ आवन तनु आवनो। हातन दे
षंया हि। आवनु हिव आवनो। कौं मनु करियै ताहि॥ ५
३॥ नायका प्रकास चिंता॥ प्रेम मय जू परूप सविवसी।
को च सोच विरह विनोद पीलपे लियत लपविकै। तरल त
रंगनि अवलोकनि अनंत गति रथ मनोरथ रहै पाद गन
विकैं। उकं आरपरी डोर घोर घनी के सो नायकौं न की हो
डीत कोन द्वारें डियल विकैं। देषै तैं तुम्हें गोपाल तिहि।
काल तहि बाल नरम तरंग की बाजी राषी रविकै॥ ५४
॥ नायक प्रछन्न चिंता॥ केसोदास सकल सवास की

नीवासतनुंकदिकंबद्धकुटिविलासत्रासह्योलिदै ।
कंसोदीमदीनोवडत्तागीअनुरागीजिदमेरेनंनवा
केसंगलागडोलिदै । ऐसीकदेइसकुंनिआउमैंका
टाहुमृगमदघनमाररसमैंमेरेनुरआलिदै । दीपकेस
मीपनिसिदीपतिविलोकिवदछिन्नकीसीछतरीवदनं
कैंकुंदसिवोलिदै ॥ १४ ॥ नायकप्रकासविंता ॥
राधिकेकीउननीकुंउनीकौंकौंकुंस्वयंवरवातसदा
वें । देवकुमारसेगापकुमारनिमानुदैदेद्धघनानबुला
वे । केसवकेसकुंवालनलीवदमालसामेरेदिएपदि
गवे । ताद्धिमषीममदेसंगताकेसोकौंयदवातसबेंव
निआवे ॥ १५ ॥ अथगुनकथनलक्षनं । दोहा ॥ उदां
गुनगननगनिदेदउति । वरननवचनविसेष । ताकुंउजा
नउगुनकथन । मनमथमथनकलेस ॥ १६ ॥ नायका
प्रछन्नगुनकथनसवैया ॥ कीरतिमह्नितनीतकेसव
कुंवरकान्हकेवलअकीरतिन्हपतिसोभमानिए । को
मलसुबाउउतप्पारेकेपरमपानिकंटककलितनाल
नलिनवषानिए । छुवतचंपकपातकुंदिलातउातततु
अतिहरिषितगातदरद्धकेजानिए । लोचनविसाल
वारुमदनगोपालहकेमदनसरनीदरसनरसहानिए

छनसवैया॥ चितचौंपाहतैवैकीतैसौयहैंअरुतैमीयसांतडर
तघनैं। उरतैसेंहिकोमललेलोलअपालकेमोहतहैतिहिसांतमैं
।गुनतैसेंहिहासविलाससमैंकृततैसइकेसवकौनगनैं। सषी
तंकहैआनवधूकेअधीनहैसांपरतीककिधौंसुपनैं॥३६॥ ब
हिअंतरगूढअगूढनिरंतरकामकलाकुलकौनगनैं। कहिके
सवहासविलाससमैंउतिद्यौंसबहुंरसरीतिसनैं। जिनकौजि
यमेंरहिजियजियैसषिकर्ममनौंवचवेमघनैं। तिनसुंकहै।
आनवधूकेअधीनहैसांपरतीककिधौंसपनैं॥३७॥ अथ।

सवलछनं॥दोहरा॥ सुद्रमीठीवातैंकदै। निपटकपटजि

यजान। ज्योंहिनडरअपराधकौ। सठकरताहिवषान॥

१८॥ षलनसवसवैया॥ रुविपंकजवंदनवंदनकंव

नरंवनरोवनजंकीवदी। कहिंएकिंदकारनकोइतला॥

यककापरनाभिनितोंदनधि। उनमानतइंछ्रघिदाल

षिलालषेनांहिनगतकैरोषरवी। तनतैरैवियोगतप्योत

रुनीतिदमानजंमोहियमाद्दतवी॥ २०॥ अथप्रकास

सवसवैया॥ काननिकेंरंगारंगनैननिकेडोलोसंगनासा

प्रकासघोटघटघटघरघरघेरुघनछायोहै।रतिकीसीरति
नाथरूपरतिनाथकोसुकहौकेसौकृष्णकौनपैपायोहै॥८
॥अथप्रच्छन्नधीराधीरासवैया॥काहूकेनेहनलाजनलीसघुझा
इहौमोहसमुद्रकोयोंउमह्योहै।कैसवआपनोमानिक
सोमनहाथपरायेहैकौनेलह्योहै।नैनानहिमिलवौकरि
एउरवैननिकौमिलवातारह्योहै।जाइकह्योउमगैसो
सषीनिमैंअहोगुपालमैंऐसोकह्योहै॥८१॥अथप्रौढा
लक्षदोहरा॥सुनिसमस्तरसकोविदा।चितचित्रमाजा
ति।अतिआरूमितनायका।लजाजातसुजात॥८२॥स
मस्तरसकोविदाप्रौढा॥दोहरा॥सोसमस्तरसकोविदा।

षीअबकेदै। जोतनकुं हरिदेषिदोदत्यों आवनोनेद
नदेषनदैदै। देषिवेकुं बदरावतिमोहि सुं कुं बक्त दोक
हुदेषें दिलेदै ॥८८॥ नायकवचन अभिलाष ॥ पा
इपरें बलिजातमनो दर आवनिसीन करै अबताकु।
देषें अघातनदी दिनकें फिरिबार किधें अनदेषें दिजा
कुं। मोसुं कहीसो कही अबके सव कैसेऊं का न पत्या
ऊंध काऊं। जान जोगमृ कऊं काइतीक विनाता दैने
कुं सिराय धपाऊं ॥८९॥ नायकवचन अभिलाषं।
केसव नैन निसंकनै निलागे दिनरि दें वेम अदीव वढावें

नकानेमजाइसुरजब। प्यारी सौं प्यारे कह्यौ क
रेकैतेरी सौं तेरीयै प्रछतनहै सब। सुंदर सौं इके
नतयौं ननकालहीमांनतज्यौनकुनीतब॥२००॥
अथ गुरमांनलछनं॥ पतिआएरतिअननतकरिति
...किचिन्हरिसाइ॥ उपजतहै गुरमांनतहै प्रछेपक
इ॥१॥ सवैया यथा॥ लालकेनाललगैपोलषि
वकपावकसेलगएनैंनपियाके। नाकुनिदारिनि
...लागेनएहगनैंकतकुनतियाके। सुंदरपाइ
...गैपस्यौपैगएवहिअैसेकुलासहियाके। कुलि
नसुन्हलिगई सुधिन्हटिकैबंधगएअंगियाके॥
अथ अष्टनाइकावर्णनं॥ उत्तममध्यमअधम
...दिव्यअदिव्यविवेक। अैसेंवरनतनाइकाबा
...थअनेक॥२॥ तातैंयहसंछेपसौं सुंदरकीयौ
चार। वरनतआगैंनाइकासगरेरसकौसार॥
॥ प्रोषितपतिका षंडिता कलहंतरिता नाम॥
...लब्ध उत्तकंठिता वासकसज्जा...
...पतिकानाइकाअभिसारिक...
...जुएसबैंवरनैंम...
...लछनं॥ ज...

पतिकासोइ ॥७॥ प्रोषितपतिकानारिकौ रात
कविराइ । दसौंअवस्थादेहमैंप्रापैजाकेआइ
मुग्धाप्रोषितपतिका ॥ मुग्धाप्रोषितपतिकाकै
रहजुप्रगटनहोत ॥ ज्यौंघटमधिकेदीपकौभीतरहो
उद्योत ॥१०॥ सवैयायथा ॥ परदेसकौलालचलेय
हहालहैबालकौंकालिंदीकेबिछुरें ॥ मनहीम
दनहीजीयलेदसषीकुंसुसुंदरबातजुरें ॥ अरु सु
नरिआवतदेवरनीलौंसकोचतेंभीतरहीकौंम
कुलवंतीकेजैसेंकटाछचलेचलकैयौंद्रगंनह
मेंडरें ॥११॥ मध्याप्रोषितपतिका ॥ सुंदरहौंग
नानकैविलोकिआईवैरनिकौंवाढौवृथा
बलाइकी ॥ फूलिजातपांनपानरूपरंगआंन
मानसकौंचेतनानहोतचितचाइकी । कालिंदीप
हैकांन्हमुथराकौंमाईआजअैसीगतिभईदईर
काकेकाइकी ॥ बोलतिहैजीलीअवलोकनिल
[illegible]ईहैढीलीपगजेहरिजराइकी ॥१
[illegible]पतिका ॥ जांननहींअबलौं
[illegible]कौं ॥ आलीकहै
[illegible]नहीकौ । सुंद

टतिकैंाँ षलकीषलताई।देषहु दैमध्य कीछुटकोटमिटैनघ
टैविषकीविषताई॥७॥अथप्रौढाधीराधीरा॥दोहरा॥उ
परूषीवातैंकहै।ज्यिमैंपियकीरूष।धीराधीराजानिवी।
केसीमीविक्रष॥८॥सवैया॥दोमनमैलेनकौ लुकहू अब
छाडीजबोलनबोलहसैंहै।केसवजेरनसेंरसरासरसेंा
रसवाउसवैंहमसेंहै।देषहुधंणकवारसंकोवनआरस
लोवनआरसीसोंहै।आपेजोवसेदिसाउछंमुआजसोल
गईप्रियकाल्हकीसोंहै॥९॥अथपरकीया॥दोहरा॥सा
बतेंपरपगसिद्धजग।ताकीप्रियासुदोय।परकीयाताछुक
है।परमधुरनलैलोय॥१०॥परकीयालेद॥ परकीयाद्यप्रता
तिङ्कानि।ऊढाअरअनूढ।जिनदेषेंसमदातमव मंततमू
ढअनूढ॥११॥अथऊढाअनूढालछनं॥दोहरा॥ उढाद
यविवाहिता।अविवाहिताअनूढ।तिनकेकङ्कविलास
सब।संततकैमबरूढअरूढ॥१२॥ऊढालछनं॥सवैया
॥वेबिसषीनकिसोसमनासबदीकेछुनैनेनिमाऊवसें।बू
ऊतवातनरपाउकहैंमनहिसनेकसबहासहसैं।षेलति
देहतषेलछतेंप्रियविषषिलावतयोंविलसैं।कोउजानत
दीहमदोषि[illegible]विलसकहा[illegible]निकसैं॥१३॥अनू
ढालछनं॥सवैया॥वेविछ[illegible]निमैंवनिश्रीवष

...प रनभ्र्र्रथकेमोराइ वै... ...मी उर

...ह उप्पारीयो ॥ तरनि तनूजातीरत रवर

...रगढेतारीदेदेहभत कुवरकाकप्पारी

यो ॥१५॥ अथपरहाभिलछन ॥ दूहरा ॥

जहांपरजननमभबहम्रितुहे ॥ तजिदंपतिकी

कांनि ॥ केसबकोनहूं बुधिबल ॥ योपरहा

सबषानि ॥१६॥ कवित्तपरहाप्रा ॥ अाई

हेयेकमहावनतेत्रियगावतमानोगिरा

पगधारी ॥ सुंदरतामानूकोमकीकामिन

बोलिकह्योवृषभानदुलारी ॥ गोपीकेला

१८ गुपालहीविअकुलाइमिलीउठिसादर

नारी ॥ केशवजेटिवेकूं नरिअेकहभीय

बकीकदेगोपकुमारी ॥१७॥ अथकला

...रलछनकवित्त ॥ तेजसूरसेअपा

रचंद्रमासेसुकमारसोनूसेउदारतरिके

रिधरीयतुहे ॥ इंद्रजूसेसम्तुसूरेरामजूसे

रिणसूरेकामकैतेरूपरूदेहियेहरीय

तुहे ॥ सागरसेधीरेगणपतिसेचतुरचित

असेअविवेकीकेसेदिनसरीयतुहे ॥ नंद

...महादयोधर्मसोकेहोकहाअेसे

...

रताअ। कहूंवमी वारकेलो

नी॥ मोलिगरेपटुकाडुनिकेशवह

मनुहारिस्रीकीनी॥ मोहिग्रचेन्नौमहा

हाकहिवाहिकहावकुवारिहलीनी॥ तेसि

रहाथिदयेउनकेउनिगोरिकेहाहपिग्रं

चलिदीनी॥११॥ अथअतिहासलक्षनं

दूहरा॥ जहाहसेहिनरसिककें प्रगटिह

सुषमुषवास॥ आधेआधेचरनपरि॥ उपा

जपरतुअतिहास॥१२॥ अथराधिकाकी

अतिहासकवित्त॥ तेमीयेजगतजोति

सीपिसीसफूलनिकीझलकतनिलकत

झनतेरेनालकी॥ तेसीयेदशनद्युतिदमकी

तकेसोदायतेसोइलसतलालकेविकंब

मालकी॥ तेसीयेचमकिचारुविबकपोल

नकीझलकततेसोनकमोतीचलचालकी

॥ हरेहरेहसिनेकचकुरचपलनेनीचित

वकचौध्योमेरमदनगुपालकी॥१३॥ अ

थकृस्नकोअतिहासकवित्त॥ गिरगिरु

वेउगिरीफिरीफिलागोकेबिवीचिबीचि

मारेहोतछविन्यारीन्यारीओ

...अनुरागलू टिलीमो दीनो राधिक
...परि कहसबसुखमानोहे ॥ कपटकपट
...ौ निपटकेओरनओ मेटीपहचानिम
नमेकंपहचान्योहे ॥ जीत्यौ रतिरनु मथ्यो
मनमथकोमनुकेसोराइ कौनपरिको
पतरिआ नोहे ॥ २३ ॥ अथवीररसलछन
॥ दूहरा ॥ होइवीररउत्साहमे ॥ गोरवरनइ
ति अंग ॥ अतिउदारगंभीरकहि ॥ केसवपा
इप्रअंग ॥ २४ ॥ अथराधिकाकोवीररस
कवित्त ॥ गतिगजराजसाजिदेहकीदीपा
तवाजि हावरथसावपतिराजचलचाल
यो ॥ केसोदासमंदहाससअपिकवचनटमि
रेनैनटनऐप्रतिभटनालेनषजालयो ॥
लाजसाजकुलकानिसोवपोचनयनानि
नोहेधनुतानिवान लोचन विसालयो ॥
प्रेमकोकवचुसाजिसाहससहाइकले
जीत्योरतिरनुआजमदनगुपालयो ॥ २५ ॥
अथहासकोवीररसकवित्त ॥ अघसो
...कबकसोविदारिहो किकंसो...
... ॥ ...

कीसी कलीनल केशव सुवास [illegible]
सी मंजरी मधुप मन निनाईये ॥ देवी वा
वानी अति वानी तैसयानी देवराज की सा
रानी जानी जग सुषदाईये ॥ काम की कला
सी चपला सी काम अबला सी कमला सं
ा देह धरे सूरे पुन्य पाईयै ॥ कौनें कीनी रि
न पट कुचील जाति ग्वारि ऐसी राधिका
कुवारि सी पै गोरस विकाईयै ॥२०॥ अथ
कृष्ण सलछन दूहरा ॥ होइ कृष्ण दरस क्रोध
मे ॥ विय हउ अशरीर ॥ अह नवरन तन सबे
॥ कहि केसव मतिधीर ॥२१॥ अथ राधिका
कौ कृष्ण दरस कवित्त ॥ केहरि को हरु करि
करी मृग मीन फनि सुक पिक कंज षंजरी
ट वनु लीनौ है ॥ मृडुल मृनाल बिंब चंपक
मराल बाल कुंकम दाडिम कर्कंद नीड़ ष
दीनौ है ॥ जारत के न कतन तनक तन कैस
सिवढत घटत बेधक जीव गंध हीनौ है ॥ केस
ा दास दास नये कौ विदकुवर कान्ह राधि
का कुवारि को पकौ नपरि कीनौ है
अथ [illegible]

८

पिउअपराधीजानत...
केरूपकौमांनकहतसबकोइ ॥[illegible]
गुरकहतहैतीनभांतिकौमांनु ॥ ज्यौंउपजैजैस
टैतौसबकरौंवषांनु ॥८५॥ लघुमांन ॥ औरना
रिनदेषतपियकैदेषिजुतियअनषाइ। यौंउपजैल
घुमांनसुनिषालहौमैंमिटिजाइ ॥८६॥ यथा ॥ पि
यदेषतदेषेज्यौंऔरतियाकेदृगत्यौंरतियाकेनैं
वदले । हरिजांनीकिमांनवतीहैनईइहिभांतिमन
वनकौविमले ॥ कहिसुंदरचातुरीसौंकीयौगौंन
पैजांनिकैतानमैंनकिचले । नरह्यौगयौबो...
तजिमौंनकह्योइसिसीषेनलेजुनले ॥८७॥ अ...
मध्यममांनलछन ॥ औरनारिकौनांउलेवि...
तैकहैसुजांन ॥ यौंसुनितनकितियहोइमां... धा...
कहिमध्यममांन ॥८८॥ यथा ॥ पौढेहैपीउ... कैह
...काकछुकांमकथानिकौतनदउचाह्यौ । सुं...
...म षतैंइकनागरिनारिकौनांउनिका
यौसतनराइकरौटनरौमाकौनांउन
...केनारननस्यौलटकौरथमं
...नकहतवै
...मौं...

...कनैंनरसमनरेज...

...पलकवेऔरैंछविछाई है ॥ अद

...दलगएन्हषनसकलकहिसुंदरअधरमैंनधर

...ललाई है ॥ जगरजगरजोतिअसीअंगअंगदोत

कंचनकीचांदीमांन्हआगमैंतवाई है । मैंनोहैपगाई

सुधिलैंनवाकसाईकीसुहनीतुषदाई देषौजैसी

केकैआई है ॥ ७७ ॥ पुनः ॥ तियतेरीईकंतनलोज्ञु

निरंतरन्हषनतेरेवनावतहै ॥ हमकौंनोहमारेहैं

पीतमकैंपनुअसौजहींढिगआवतुहै । जबसुंदर

गहनैपहरीतबयौंकहिकैउतरावतुहै । तुवमू

तसौंमेरेनैननिकौंइतनौउरअंतरनावतुहै ॥ ७

...रूपगर्विताल्छनं ॥ अपनेतनकेरूपपरजोना

...गरवाइ । रूपगर्विताना इकानाहिकहैकविरा

...श ॥ यथा ॥ आननहमारेकेतमासेसुनिसुंद

...तुवनकरतकांन्हकौकुंनअघातहै ॥ नि...

राषेंअषिमषीनिकीलल्चातिचाव...

केलोचनलुभानतहै ॥ औरसुनौकम...

दौरतिहैबैविवेकौंआ...

हैमतिअ...

ही ॥ तनमेंनहोइउदास ॥ ३० ॥ अथमधिकोरो

वीमउत्तरकेकवित्त ॥ मातहीकोमोहूतोहि

लागतहेमोठोमुषपियहुपिताकोलोडूनेंक

नाघिनातुहे ॥ त्रयानिकेकेमनकोकाटतनक

मकततेरोहीयोतेसोहेजुकहतपिहोतुहे ॥

जबजबहोतलेटमेरीलटूतबतबअरसोसो

हेदिनउतिपातनमअघातहे ॥ येतनीपिआच

नीनिआवरीकीजाईहेहूंकेसोराहूकीआंक

हितेरीकोनवातहे ॥ ३१ ॥ अथहूसकोवीउ

त्तरकौ ॥ कवित्त ॥ टूटेवाढघनघनेधूमसेरि

सोनिमनेंफीगुरउगोझीसोपवीठनिघा

तजू ॥ कंटककलित्रत्रिनवलितविगंधजल

तिनकीतलपतलताकोललचातजू ॥ कुल

टाकुचीलगातअधतमअधरातकहिनसक

तवातअतिअकुलातजू ॥ ठोमीमघुमेकिघ

रिईधनकेघनस्यामपरघेरनीहपेजातन

घिघातजू ॥ ३२ ॥ अथअनुतरमलउ

त्तर ॥ होइअचिंतोदेषि

तरयजानि केय

हौ विमद घनवाहन औ घनस्याम काहू आनहा
रै हरि वाकु स्यो कैसो हारिहौ । वेही काम कामवर
छजकी कुवारि कानि मारत है नंदके कुमारक
ब मारिहौ ॥ २२ ॥ अथ नयीनकरस लक्षणं
हन ॥ हो इन्न यानकरस सदा । केसव स्यामस
रीर जाकैं देषत सुनत ही । उपजि परत नयन्नीर
॥ २३ ॥ राधिका कौ नयानकरस ॥ कवित्त ॥ दुव
मेंडल मंडित के घन घोर उगी दिवि मंडल मक
गटी । घहराति घटा घटवात के मेघ घटघोषघ
टै न घटी कहू घटी । दमकं दिपि केसव दामिनी
देषि लगी पिय कामिन कें वतटी । जनु पंथहि
पाइ छुरे दरकै वनिपाव ककी लपटे कपटी ॥ २
४ ॥ अथ हस्य कौ नयानकरस ॥ कवित्त ॥ रे
[illegible] मेरस के बोल विसये यरस होत जानें सा पब
लपित दाषैं जिन चाषी है । केसौ राइ उपदावे
लाइक तये वत्तुम आज हौ लौं जी मैं जाकी आंषे
आनि लाषी है । सुधि केसु धारिवे कों आय पिष
[illegible] मृधी वातें मोसों उनि नाषी
[illegible] पीकें धोदें षो जाइकों

डौ तिडौ नवी ॥ ३१ ॥ नायका प्रछन्न श्रवन दर्शन ॥ [illegible] ॥ सौंह
दिवाय दिवाय सषी हरि बारक कानिनि आन मिलाय । डौनै कौ
के सब कानिनि तैं कित है[illegible] बैनैं ननि मांह सिधाय । लाड के सा
ऊथरे इरहैं सब बैनैं ननि लैं मन हीस मिलाये । कैसैं कारुं अब कौं
निकसैं री हरे हिहरे हियमैं हरि आय ॥ ३२ ॥ नायका प्रकास
श्रवन दरसन सवैया ॥ कौंलौ पीढो कनर समरूप की बुकै दै पा
सकै सो दास ज्यैसे हीन यनन रि पीऊ ई । वीर की सौं मेरी वीर वार
रूं तो वारूं आन नेक करि हसि [illegible] बलाइ तेरी लीऊई । [illegible]सक
मां फूइ रूवेम अलबेली वीतें दे [illegible] षमषीन कौं अब हे नदीऊ
ई । परी लडवावरी अहीर ज्यैसी बूफ तो हिनां ह खुं नद कौ डौ म

नकीनैं होत है। सुष सोभा की हानि ॥७२॥ सवैया ॥ देखु षसम षीन
वीच मों है घाय छाइ कैं षवाइ कछु पाइ कीनी वर कीनी वहु है
। कोमल मृनालिका सि मल्लिका कि मालिका सि वालिका हु
डारी मीड मान मकि पसु है। जानें न विसात नयो के सो कुनै कौ
वात दे षो आनि गात जात नयो कि छैं अमहे। थिर सी जो डा
रि राषी चित्र नी विचित्र गति कहि कैं न येर सिक यामैं कौनर
म है ॥७३॥ मुग्धा को मान ॥ दोहरा ॥ मुग्धा मान करै न ही क
रै तो कुनै निदान। जौं डर पाइ छुडाइयै। जौं डर पैं अपमान ॥
७४॥ सवैया ॥ बोलि नवाल कुलावति कैं न षरे षलि षें हुर
षम परे षें। आवुनी हाठ विलोकि विलोकि कहो तन वंकत
वक्त छिपि छि नाषे। छोटी वडी नि थिरे षलि षी जग आव कीरष
सों कोन छिपि राषे। गेमनैं बोल सदौन परैा अकुला इ कहो
पिव के मी है हैं षें ॥७५॥ अथ मध्या भेद दोहरा ॥ [illegible]
रूढ यौवना। प्रगल्भ वर नाजान। प्राडुर्लेल [illegible]। सुर
त विचित्रा ज्ञान ॥७६॥ मध्या आरूढयौवना ॥ दोहरा ॥ म
ध्या आरूढयौवना। पूरन यौवनवंत। नागर दागनरी सदा
नावति है मन कंत ॥७७॥ सवैया ॥ वंद कौस [illegible] न
छुटी कमान ज्ञे भिमन के सपेन सरनैंन नि विलास है नासि
का सर जगं धवाद से सुगंध वाद दारो सो बने दसन के सो वी

त॥३७॥ इति श्रीरसिकप्रियायां संजोग श्रृंगार वर्ननं नाम
सप्तम प्रभाव:॥ ॥ अथ विप्रलंभ श्रृंगार वर्ननं। दोहा॥ वि
छुरत प्रीतम प्रीतमहि। होत जो रस तिहि ठौर। विप्रलंभ श्रृं
गार कहि। वरनत है सिरमोर॥१॥ विप्रलंभ श्रृंगार के। वि
प्रलंभ श्रृंगार को। चार प्रकार प्रकास। प्रथम पूर्वानुराग पु
नि। करुणा मान प्रवास॥२॥ अथ पूर्वानुराग। देषति हि द्रुति
दंपति हि। उपजि परत अनुराग। विनु देषें दुष देषियें सो
पूर्वानुराग॥३॥ नायका प्रछन्न फूलन दिषाव फूल फूलनि
देहरि विन इरकरि माल बाल व्यालसी लगति है। चंदन
चढाव जनि तापसी चढत तन कुंकुम न लाव अंग आगसी
लगति है। चवर चलाव जिनि तापसी चढत तन कुंकुम न
लाव अंग आगसी लगति है। वार वार वरजति कुं वावरी
के वीरी आनि वीरी न षवाव वीर वीरी विससी लगति है
॥४॥ नायका प्रकास केसव कैसेहु डीठि न ईवतें डीठ प
रैं रति ईवक न्हाई। ता दिन तें मन मेरे कुं आन लई सो लई
कहि कौ जन जाई। होयगी हांसी जो आवै कछु कहिजा
न दिहुं दिन बूझन आई। कैसे मिलौ री मिलैं विन क्यौं रहुं
नैननि देउ हिये डर माई॥५॥ नायक प्रछन्न। एक समैं
वृषभान सुता सह नीगन मैं जननी संग वेसी। जा तें ब कै वि

लखितैंअतिकूलन…लनफूल्यौ।फूलेसेडोलतबोल
तऊंअतडातकितैंमनततवमफूल्यौ।जानतिऊंयहकाऊके
आऊमनोहरहारहीडारनफूल्यौ॥४॥नायकउकासम्पूर्
त॥वासरवासरतणविसकेसवडासनडासनकीगतिलीने
।बंदनबांदनीत्यौंचितुवाहनबंदकबंदवितारसलीने।पान
नषायेनपानकरैकहुदासविलासविदाकरिदीने।औसीदे
गोकुलकोकुलकीडिदिगोकुलनाथदिंएढगकीनें॥५॥
उद्वेगलछनं।दोहरा॥सुषदायककेजातिजहां।सुषदा
यकदुखनयास।सोउद्वेगदसाडसद।जानतकेसवदास॥
६॥नायकाउद्वेलनउद्वेग॥बंदनदिविसिकंदहैकेसवराद
यदेगुनलीलनलीनो।कुंतलजापावनजानितपावननौरंपि
यौंपविजाननदीनो।यासौंमकषधरसेषविसेषधनातअधरौ
विधिदेवुधदीनो।सरखंमाईकदाकदीपदपापडौ।आप
बराबरकीनो॥७॥नायकाउकासउद्वेग॥केसवकामलि
विलोकिनडीवहआजुविलोकंविनांसुमरैडौ।वासर
वीसविसविसमिंडीएडाककीजामिनीडोपडैरैडौ।पाल
कीतेसुवहमितैंपालकआलीकरारिकलालीकरैडौं।उ
षनदेककहुंहजातनषनहमनदेहकोदरीदरैडौं॥८॥ना
यकउद्वेलनउद्वेग॥मेघनीजाहसिंदसनिदरतदंसनि

नादसुनकीजई ॥३३॥ कन्हैयाको प्रछन्नश्रवनदरसनं ॥
लंघतदैलोकालोककलीकनतलंघीजायसबदीठुसमुझावै
तोदिसमुझावैकौ। वोमनकदततत्रुतनकानछूटैलाडथ
नमीतरदोऊराषिकोविदकहावैकौ। सोवडंसंकोवड
कोपूरवपछिमपंथकेसोदासएककालएकैंडनधावैकौ।
डषसुषडरिडरिडरडंतेमेरेमनडेसीसुनीतेसीसुंा।दिनी
दिषावैकौ ॥३४॥ कन्हैयाकोप्रकासश्रवनदरसन ॥स
वैया॥ निपटकपटदरवेमकौप्रकटकरुवीसबिसवसीक
रकैसैंजरआनिये। कामकौपदरपतुकामनिकौनरपतु
काहकौसंकरपत्रसबजगजानिये। [illegible]ऐवै[illegible]

कोविदकहतवषानि।योरसलावैंप्रीतमहि।ताहीरसकीहानि
॥५४॥सवैया॥देषीहैगुपालएकगोपिकाअनूपरूपसोनेंतें।
सलोनीवामसौंधैतेंसुहाईहै।सोताहिंमुलायअवतारुलियौ
घनस्यामकिधौंघनदामिनियौंकामिनिह्वैआईहै।देवीकोअदा
नवीनमानवीनहोयछैसीसामिनिनहावलावनारछीपढाईहै
।केसौदाससबसुषसाधनकीसिद्धियहमेरेंजानेंमेंनहीसौंमें
नकाकीजाईहै॥५५॥चित्रविभ्रमाप्रौढादोहरा॥अतिवि
चित्रविभ्रमसदा।प्रौढाप्रगटवषानि।जाकीदीपतिइतिका
पियहिंमिलावैआनि॥५६॥सवैया॥देगतिमंदमनोहरके
सबआनंदकंदहिएतलहेहै।तौंहविलासनिकोमलहासनि
अंगसुवासनिगाढेगहेहैं।वंकविलोकनिकुंअवलोकसुमा
रकैनंदकुमाररहेहैं।एईतौकामकेबाणकहावतफूलनिके
विथिलैलकहेहैं॥५७॥आक्रामितप्रौढा॥दोहरा॥सोआ
क्रामितनायका प्रौढाकहिदेंचित्र मनसावाचाकर्म्मणा ।
जुहिवसिकीनौंमित्र॥५८॥सवैया॥नाहितगायवजावतना
चतवारअनेकसिंगारवनायो।डीठमेंआनकौआनवोसारो
रीतेरोतउननयामनलायो।तावैसोऊंकरिवौकरिनामिनि।
नागवडैंवसितैंकरिपायौ।कोकलौंमधेकुंवाहतनांहिसो
वाहतहै अबपायलगायौ॥५९॥लब्धाजातप्रौढा॥दो

सुंडीवपसोनकनुसुंडीवगईदविपीवकीघाैं गं
ईगडिलाङ्गतिदिदियहंतोउविङरिकेसवकाेप
निषातैं इतरीसमैंङंनववीकवङंसरदिववङं
अंषियांनकीनातैं नीलनिवोल
डरायकपोलविलोकितदीकीअबोलकतोदी
डानपरीदसिलोलततीतरस्तागिराईअवलोकि
तमोदी कूजेकीङकिलाबिदेकाफदीकेसव
केरुचिरूपलेलोदी मोरसकीसबवाकीसोहे
रिकीवारलगीकदिमेरिसकोदी
मोहनमरीचिकासोंरुपपनसारकैसो।

वारि स्वरूप की सी रेषा अवदात है केसोदास वेनी ता
त्रिवेनी सी वनाइ गुदी या मैं मेरो मनोरथ सुनीसे अवदात
है नैद्द ग्रर के सनैन देषि वेक्कुं विरुके सविञ्ज की सी बुदे
वर्ण केस नरज्ञाति है देवी की सी कीनाइ विधि कौन की
जाइ यह तेरे घर आई आजु कही केसी वात है

तरकि तवैं कनि तविवलें चेतर
है सु हदेषि मोवन्मादजुना वही रावैं हसें विसेष

केसव वों कत सी वित वैं छतियां ध
रकैं तरकैं तकिछांही बूझीए ओर कहै सुद ओर ही ओ
र की ओर लइ पलमांही डीठ लगी कि धौं वाय लगी मनहू
लपस्यो [कि कस्यो] कहुकांही घंघट की घट की पट की कहु आ
जु हरी मधुराधे कुं नांही केसव
सबुधसी धहरी तमवीन वाया अगाधि राधी कहीवा
ढी छूटि लटें लटकती कटितलङ्ग वितवतिनी ठडी
डक रिटाढी तरकती तकातिर तितनु तलफति छू ति
अपार अपवारति डाढी सकसकाति लेसाम अवेत
स वेतक्षंप्रमपतमा हिकाढी
गूढ अगूढ प्रकास तवात तिलोक अलोक की वात म
री सी रोवत है कवञ्ज दसिगावत नावत लाजु की बा

तरिअंखिन आऊअंकैसेवलेंमनलीनें

बातकदतबीयजौरत्यों देषेंकेसवदा

स उपकतमक्षामममाखतदां मातुनिकेसविलास

कदैकाव्हसिगरीनिसिनासीक्तेतमदीकद

वादतदी तनमुतनुरेषलिषीकदिकेसवकंटक

काननगादतदी कछुरातीसीअंषिकदासईतां

ततिदारेवियोगकेदादतदी दियवेंवकरीतिर

वीऊबरंस्वकलाइलईतरनादतदी

ऊनकुंबबकावतिमोदि

त्यौंआईबकावनकैगरई अबयादितैतास्

बदलानकीछांहीं रू॰वा॰

हूंनरुवडेरीईवसुइतोकदावनैंकुईवरीवदेतई
वकौनकेंअली कान्हीकेतोमोसुंघालनंदलालला
लकैरैकान्हनआईग्वालडोपेंवक्तीलली आ
छदेहुवीवपरीवीचपारवेंछुंमाईअनरांसुंमहि
यसोंकनेरकीकली वेरदीकदेकीकोउसाषिदे
छाछनीपरीदेषिपडोंआंषिसाषिभुजवेकीकाचली
वालिएआपत्यौंबोल

तनांहींत्यौंनमोतेंकहाकछुबूकतिहारी केसवा
कैसैडदेषउनेविनडानेंकहाकोडीकीपियारी
घीरमिराईनडातनषाईनईयहरूषकीलांतिमिहा
री काविहिहाषहिवाहतवाघीसोंस्वंततोउवम
कुंजविहारी प्रीयको

कहौकैरनडहा प्रियाकुंनहिलाड उपडत
देलक्षमानतहां वरनकहतकविराड
आगैंकहाकरिहौअबहीतेंइतौसुषदीनौ क
ह्यौविडकीनेकेसवकोनहिलाडकीलाडतेंनूलि
गईतोसईहितहीन लटनहीलरिकेंकललान
रिझीलनबोलेडबोलनवीन देषनहीकबडं

डहरीसी काजकोसोचसंकोचनकेसवंदेषतआव
तदेदमरीसी वामकीवायकिकामकीवामकीदैद
रिकीमतिकाजदरीसी मजलव
कितचितचितवतवजंदिसिवादिवादिरदंषुदच
पलताधायधायंसोचतसेमनकछुकंपततपनतना
केसोरायरोवतदसत कछुगायगायंचलजदिषा
वतादेदेषतदीतयोमोदतयसंकदतआईतोदअ
लीअकुलाइडेसैंकछुआकबाकबकतदैआज
दरीतेंसंडीनीनामसुदकाजकोनिकसजायं

अंगवरनवैवरनजदां अ
तिन्वेत्रम्बात नैननीरपरतापवज व्याधिसाकेसो
दास वेन्तत्यके उनवीननितेंवा
लनेनविलोकेंताबुधिलगीदै वैन्सफनेंसमफऊनव
वाबदीउतलग्याकिधैंडीतिलगीदै केसववैतो
दितादिरिटैरटतादिइतैउनकीदिलगीदै वैनघेपा
ननिपानिनवंसोतेंकाङ्गवगकिवंकाङ्गवगीदै
उदांउनकेतननतापसंतापइदांइ
नकेअस्कआनिअझैये उनेदांउनकेंउडझैयेंउमा
सनिदांइनकेउपचारझडेयें केसववैनंदलालनि
एदूषसानललीकेनिदाननणदै एकदिवारदोउति
कदानयोमाइवलोउनदेषनझैदै
त्तलिजायबुधिबुधिजदां खुषडषदोतसमान ता
खुंजडताकदतदै केसोदासखुडान
घरेउपचारघरीसीजरीसोजरेसंघराइघरोतनुब्बी
झै ब्रैसमैंउरकीयेंतेकबुउपझैतासके लिकदाद
मलीझै देषतदीइदकामकलीब्रुमलाइएझातक
हाअबकीझै कौनएझाउकदाकरुकेसवकैसेंडी
एवदंदंमकैांडीझै ब्रंषीयांनमि

जौंघनरूपनपीवै कंजनजौंवितवंदनवार
तवंदयोंकंजनिकैंजनछीवै तालतैंवा
निवागतैंतालनितालतमालकीजातनसीवै
केसीदैकेसवबैजावतिरूनिजैसीदसापियकी
पलुजीवै सोदिमबी
नरिलतविलोचनकापतदेषतफूलतमाललहि
फूलेसेडालतबोलतनादिनवागगाणकिधौंतेरैंदि
तालदि देषोजोवाददतदेषिनआवतिजैसैमं
जंनदिषावरीलाललदि आजकदादिबसाधल
गीजबदेषोकहुनसुदायगोपालदि
जुमतरैंमनसौरजौं दैतनमन
परताप वचनकदैपियपछसं तासंकदतप
लाप छैलनदासिनषोरिजु
वाउनदैतनवैरुदियाकेंप[illegible] लेहुनदैउदलाव
ललावनदीकहुमाननतोकहुतासं आनिदयोंमु
षमेंमुषकेसवकेंमैसजरीकदाकंजकौमुं नैनतरैं
नरिमालिकदै दैषो अरिदिषोरीकान्हकदाकसै
मोसं अलीलिकिमाऊमिली
जतिषलतजानेकोकान्हधौंआपकदातें सुडीवा

डेंरमनीनिके पद्दिलेंकेसैदास तिनडंडगितेदे
षिसषि करतडेप्रमप्रकास: ज्ञतिज्ञाद
रज्ञतिलासतैं ज्ञतिसंगतितैंमीत माधनिडुके।
होवदे केसोवंस्वलवीत ज्ञनगादसादसैं
कदी उपडीप्रनगग डिंदविधिउपडैमानम
नु वरनौंज्ञनौसलाग

प्रनप्रेमप्रतापतैं उपडिपरत

कढाउनिएदिनांतिकरि। बहुविधिहितनिजजाय। आ
पउहुंतैलाहुतजि। पतिहिमिलैंअकुलाय॥५६॥सवैया
॥पंथनवकंतप्रलमनोरथरथनीकेकैसोदासजंगमगसे
जेसंगाणगीतमैं। पवनविवास्वकवक्रमनवितवहिस्तल
अकासनवैंघामजलसीतमैं। कौतुकराउखिरवउवापिकूप
सरसमदरिविनकिनंबजवासरवितीतमैं। ग्यानगिरिफो
रितारिलाहुतरुजायमिलीआउहितैंआपगायौंआपी
निधिप्रीतमैं॥५७॥ जातिलइसंगजातिलैंकीरतिकेसवै
कुलमैंहितकहौ। गर्वगयौगुनयौवनरूपकौउन्यसता
सतापलकुंपलउहौ। काकतिदारीयआनकरूंएकला
जछुनीकौइनातावदहौ। आन्यौसबैंदमदहरिभमेंउमपं
तनकौकपटौनदिहुहौ॥५८॥दोहरा॥ अधिकअनूठा
लाहुतैं। पीयपैंजायनआप। कौंजैंफरिसषियौंकहै। ता
कैउरहुंताप॥५९॥ जानैकौकेसबकौनकहौकबका
हूहमारेहिंमारनफूले। पानलिषायतपानीपियैंतबतैंतरि
आंषियलेतसझूले। जाकुंनदीवलिवेगबलाइलौंलेदीसं
केलकदायहमूलें। जानतहौयहकामकलीकुमलाइ
गईबजकूंफूनिफूले॥६०॥ प्रथममिलनवर्ननं॥दोह
रा॥ जनीमदेलीधायघरि। स्नेंघरिनिमिचारि। अतिनय

वतश्राङ्गदि बलेनन्हलिगरैंपाग्द्दैा। दिवुदेदियदेकिधं
नादीतनवदितनादिदियैतोललालरिद्दा। दमसुंयदवुकी
एश्रसीकदोड़कदीसाकदीवकदाकरिद्दा॥५४॥केसो
दासघरघरनावतफिरतगापण्कापरछकितमेरगुनीयत
है। वरुनीकेवमबनदाउसंयसषासवसंगलैकैडैयडष
मीमध्कनियतद्द।माद्दितागयावनंद्दीणद्दीपमालापायीमा
यनमवारवकुं वितबनियतद्द।डावनसुलालनेनलेबवा॥
मगद्दिसबपमकपेरईश्राडाषगंसुनियतद्द॥५५॥दोहरा

न। बुधविवेकबलसमुझिजै। केसवसकलसुजान॥८४॥
॥सवैया॥ उधमसकलसुविमकूनअमलवासजावकसु
देसकेसपासकौसुधारिबौ। अंगरागभूषनविविधसुबवास
रागकजूलकलितलोललोचननिहारिबौ। बोलनहसन
चितचातुरीचलनचारुपलपलप्रतिपतिव्रतपारिबौ।
केसौदाससविलासकरहुकुंवरराधइहविधिसोरहसिं
गारनसिंगारिबौ॥८५॥सवैया॥बहिरतिचारऱ्यारअंत
रतिपांचउनरतिविपरीतनकेविविधविचारहै। केसौदा
ससविलाससमंदहासजुतअवलोकनिआलापकौआनं

नरहौ किरहीरु विरहै। कोरि विचार विचार तिहैं उपचार नि
क[illegible]षमषिमदें। काहू हुरोगहि नमानें तिहारे विलोकनिमैं
विसवीसवसैहैं॥३८॥नायककोउबाषसवैया॥प्यास
करहीवदामसतागीलु षगदौ वासकेसोदासनीदहू कीनि
दादीनवानीहै। मतिकोमतानलेइ विद्याकीविदाईदेइसो।
लाजकीसइसेइसबसुषमानीहै। विसमेलगतगीतकेलि
कीनपरतीतडीठि उरपाउनीसीपविपहिचानीहै। तोवि
नकहै कोनाथधीरतानताकेंमाथमोहकोसलाषहाघला
उकेंविकानीहै॥३९॥दोहरा॥ विप्रलब्धउरटनबीतकडूं
डितनेकरहीउपाउ। तेसबकेसवदासअब। वरनेंसबति
सुनाय॥४०॥ जबचितवेंपीउनतहीं। तबचितवेंनिहसं
क। जानिविलोकितआवतों। अलीहीलगावतअंक॥
४१॥ कबकहूतिकेंडूकरै। आरसमैं औंडाय। केसवदा
सविलासमैं। वारवारजमहाय॥४२॥ रूठैं हिहैं सिरं सि
ंवे। कहैंसषिनसैंवात। ऐसेमिसहिमिसपिया। पियहि
दिषावेगात॥४३॥ योंहिपीयवियानउति। प्रगटतअपनी
प्रीत। माउछुनलउकामकरि। बुधबलकरतसमीत॥४४॥
नायकाकोवछलवेषासवैया॥ चोरिविचारिचितवतवता
सुदमारिमारिकाहेवातहमिहियहरिबुवढायोहै। केसो

नखुता [illegible] मनोहर और निद्रीव निआनत है ॥४॥
वि[illegible] मरस लछन ॥ वाम विभूषन प्रेम तैं । जिहां होय
विपरीत [illegible] रस तनमन रसन । गति विभ्रम के गीत
॥५॥ नायका विभ्रमहाव ॥ कटि के तट हार लपेटा
लयो कल किंकनि लै उर सैं उरमाई । पग नो पर सैं पा
ग पैं विविनां अंगिया सुध अंचल की विसराई । करि
अंजन रंजित चारु कपोल करी [illegible] भावक नैं ननि
काई । सुनि आवत श्री ब्रज भूषन [illegible] भूषति हीन
विदेषन धाई ॥६॥ नायक विभ्रमहाव ॥ नंद नंदन

॥९७॥नायकाउकामगुनकथन॥ पंकजनहै मनरंजनके
सवरंजननैननकिधौंमतिडीकी। मीवीखधाकिसुधाधर
कीडतिदंतनकीकिधौंदाडिमदीकी। वंदलतलामुषवेदी
कधौसभौपूरतिकामवकीकाककीनीकी। कोमलपंकज
कैपदपंकजप्रानपियारेकीमूरतिपीकी॥९८॥नायक
प्रकामगुनकथन॥ लोचनवीवरुनीरुविराधाकीके।
सबकैरांमेजातनकाढी। मानजमेरेगदीअनुरागनि
कुंकमपंककलंकितगाढी। मेरीयौंलागिरहीतनताज
नयौंडतिनीलनिचोलकीबाढी। मेरदीमाहुदीएयदसं
घतजोजुरुविंददएमुषटाढी॥९९॥नायकउकनगु
नकथन॥ जोकजकेसवमोमसरोजखधाकरहंगनि
देदददेदें। दारिमकेफलश्रीफलविद्रुमहाटककोटा।
ककहमदेदें। कोककपोतकरीअदिकेहरिकोकि
लकीरजुकीरकदेहैं। अंगअनूपमवारीयकैंउनकी
उपमाकहिवेउरदैहैं॥१००॥अथस्मृतिलछ[...]
हर॥ औरकछूनसुहायकहां। तु[...]
मनमिलवेकीकामना। ताहीकुंस्मृति[...]
काउजलस्मृति॥ बालपासुहायनषेलाहसै[...]
पासु८हायनउषमहोमेसौ। नीकीयवात[...]

ललचौंहकुटीकटिल्लूटिनितंबललईबङ्गकाली।चैननिसो
चसंकोचसकैनैननिछूटिगईगतिकीचलचाली।द्यौंसकधीर
धरैनधरैअबलैमिलहंत्तुमकुंवनमाली।वाकोअयानी
नकामवेङ्कंतरआयदैडोवनकेअफताली॥६४॥मुक्ता
मननिकीदेखुतिउरीसीनाकदाव्यौंदानेदंतनकीदसित
बतीसीदै।मोहनकेमंत्रनिकेअंवरानकीसीरेषल्हकुटीसु
वेषतेदलावचविज्ञीसीदै।चितवउगाईतफकीसीतफके
सेचरकुचसङ्कुचौंतानैननितफकीसीदै।केसौदासरूपा
कीसीसालाउमकीसीमालाआङलौंनदेषीखुजीतैसीआ

हूदीसीहै ॥६५॥ अथ नवल अनंगा वर्णनं ॥ दोहरा ॥ न
वल अनंगा होय सो। मुगधा के सौ दास। षेलै बोलै बाल बि
धि। हसैं रसैं रस विलास ॥६६॥ सवैया ॥ चंचल नैनहू कें नाथ
थं चलन हूं बोलिवा हसा वैन कुमारिका सु कतासु वायो हूं। मं
द कसं दीप हुति चंद मुष देषियत दोरि कै डराय मैं बाहु हार
लौं दिषायो हूं। मृगज मराल बाल बाह दै विहार देहूं लावै
हुम के मैं सौ तो मो हू मन लायो हूं। हलकें निवास मधुरैसें वच
न विलास सुनि मौन मुनै सुरत हूं तें स्याम सुष पायो हूं ॥६७॥
अथ लज्जा प्राय रति मुग्धा ॥ दोहरा ॥ मुगधा लज्जा प्राय र
ति। वरनत कवि यह रीति। करैं जो रति अति लाज सुं। प्रति

द्विवढावैधीति ॥८८॥ सवैया ॥ बोलिनकुंवेबुलाइरहे

हरिपायपरैअरुओलियओरी । केसवलेटवेकुंलरिवे

कहुडायरहेडकमैंपेनओरी । सुधेवितवेकुंकेताकीया

सिखंपत्रवायत्रंगुवलेगोरी । मैंनरिवीततकवितयोनर

हीयदिनेननिलाजनिगोरी ॥८९॥ सुग्धकोसयनवर्ण

नं ॥ सुग्धासोइरहैतहां । पियसंगसुनजसुडान । जोको

जेसोवैंसषी । सुषनदी समान ॥९०॥ सवैया ॥ पाय

पैंमनुहारकरैपलकांपरिपाभधरसैलयलीनें । सोइगई

कहिकै सब कै रीझ कौ रह्यौ कौरतै सौं दन कीनैं। सा दल कैं ष
र्यौ सुख है छिन नैं द्दारि मानस हैं सुष लीनैं। एक उसासनि कैं
उससैं सगरे इख गंध रि दाब रि दीनैं॥७१॥ स्वप्न कौ सुरत॥
दोहरा॥ स्वप्न सुरत करैं नहीं। सपने ज्यौं सिष मानि। सु लब

तयौऊधिद्दरीतसुनीतहियैकद्दिजायनतैसी।तादिनतैंऊग
कीऊवतिनिकिलागतिकेसवबातउनेसी।चाहफिरयौवि
तवककवजनकऊंउतिदेषतिवाखुषकैसी॥८३॥नायक
प्रकास४ तांतिललीवृषभानललीऊबतैंउषीयांउषीयां
नसैडोरी।खेदबढायकहुडरवायवुलायलईदसिकैब
सिलौरी।केसवकौऊत्यौंतादिनतैंरुचिकैनविलोकितके
तानिहोरी।लीलतिदेसबदीकेसिंगारउगारनिडौविबु
वंदचकोरी॥८४॥अथदसादसलछनं अभिलाषस्तविं
ताउनकथन।स्मृतिउद्वेगप्रलाप।उन्मादव्याधिऊडताम
वै।होतमरनउनिआउ॥८५॥अभिलाषल।अथअभि
लाषलछनंदोहरा।नैनबैनमनमिलिरहै।चाहैमिल्यौस
रीर।कहिकेसवअभिलाषयह।वरनतहैमतिधीर॥८
६॥नायकाअभिलाष सुधिबुधिमिटीऊतिदेदघटीदिन
हीदिनचाहिएवाढतसी।कहुकेसवआवनेपेटकीपीर
डरावतिपेखुषकाढतसी।विसरीसुषदूषसषीनिसिनीं
दपरीचितचाहनआढतसी।गयोकहुगांवितैंछूटिछ
बीलितंकाहेउंडोलतडाढतसी॥८७॥राधाकोप्रक
सअभि ऊोककंदेषिलगैंदिषसाधदिषावतिदीदिनदी
उषपैंहै।याहिसैंकेसवदेषियबोलुनदेषिहोदषिस

दछपारदै।छुटिजातलाजतदिन्नूषनछुदेसकेसछुटिजा
तद्वारसबमिटतसिंगारदै।कूडिकूडिनवैंरतिकूडतछु
ननिषगसोईतोछुरतसषीश्रोरतौव्योदारदै॥८६॥अथ
छुरतांतवर्णनं॥सवैया॥छुंदरतापयपावकजावकपी।
कोहियेंनषचंदनयेंदैं।चंदनचित्रछुधाविषछूंजनटूटिस
दैंमनिहारगएदैं।केसवनैननिंनीदमईमदिरामदघुमतमा
हमएदैं।कलिकेंनागरिनागरघातनजागरसागरखेषनये
दैं॥८७॥अथधीराअधीराधीराधीरालछनसदोहरा॥मगरी
मध्यातीनविधि।धीराश्रोरअधीर।धीराधीरातीसरी।वरनतहैंम
तिधीर॥८८॥धीराबोलेंवक्रविधि।दानीविषमअधीर।पिउ
सदेतनगददनौं।योंधीरानअधीर॥८९॥अथमध्याधीरा॥
सवैया॥योंयौंजलासमकेसबदासविलासनिवासहियें
अवरेषौ।त्यौंत्यौंवढ्योउरकंपकछुन्नमलीतलयौंकिधौंसी
तविसेषौ।छुडितदोतसषीवरहिमेरैनैनसारोजनिसाछु
केलषौ।तैंसकदोछुघमोदनकोश्रखिंदसोहैंसोतावं
दसोदषौ॥९०॥अथमध्याअधीरा॥सवैया॥तातकैसो
गातसबबलवीरकैसो।माखकैसोखंजमदामोदमनला
योहै।चलसोअचलसीलअनलसोवलवीतजलसोअ
मलतजतजकोसोगायोहै।केसोदासवसतअकासके

कातग्र। आलस्य दैन्य रु मोद। स्मृति धृति व्रीडा चपलता श्र
म मद चिंता कोह॥८७॥ गर्व हर्ष अरु अविगुपति। निंदा।
नींद विषाद। जडता उत्कंठा सहित। स्वप्न प्रबोध विवाद।
॥८८॥ अपस्मार मति उग्रता। त्रास तर्क अरु व्याधि। उन्मा
द मरण भय आदि दै। व्यभिचारी जुत आधि॥८९॥ हाव ल
छन॥ प्रेम राधिका कृस्न कौ। है तातें सिंगार। ताके भाव प्र
भाव तें। उपजत हाव विचार॥९०॥ हेला लीला ललित
मद। विभ्रम विहृत विलास। किलकंचित वीछुति अ
।क हि विब्बोक प्रकास॥९१॥ मोटायित सु निकुट्टमित। बा
धक आदि बखानि हाव। अपनी अपनी बुधबल। बरनत कवि
कविराव॥९२॥ हेलाहाव लछन॥ ह्रै रत प्रेम प्रताप तें
। ज्ञलत लाज समाज। सो हेला तिहि हैरत ही। राजा श्री
व्रजराज॥९३॥ नायक को हेलाहाव॥ अवलोकनि।
अंकुस अैंचि अनूप मनु पक गपास सलैंगलि मेली। मृदु
हास सुवास उवाय मिलीव हजोक कीजामनी मांफ अ
केली। अधरासव प्याइ किएं वमि के सव राइ करी रस
रीतिन वेली। वन मैं वृषभान सुता सुषदी। हरि कार नले
गई हेल ही हेली॥९४॥ नायका को हेलाहाव॥ वैन सु
नाइ बुलाइ लई तब नैनन बुलाइ कै सातिन ली कौ। सु